बौद्ध धर्म एवं सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर : भारत और चीन

हिमांशु द्विवेदी*

सारांश

बदलती विश्व व्यवस्था में महाशक्तियों के बीच बीते दशकों में तेजी से संघर्ष बढ़ रहा है और नई महाशक्तियाँ विश्व व्यवस्था में अपना योगदान बढ़ाने का प्रयास कर रहीं हैं। भारत और चीन एशियाई शक्ति के रूप में अपनी पैठ को पुष्ट करने के उपरांत अब विश्व पटल पर महाशक्ति के रूप में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। किंतु चीन ने पिछले कुछ दशकों में जिस प्रकार तीव्र छलांग लगाई है, भारत उसके मुकाबले लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ा है। महाशक्ति बनने के लिए कई सारे घटक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमे से संस्कृति एक महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में है। जिसकी आगे इस लेख में विस्तृत चर्चा की जानी है, कि किस प्रकार से चीन द्वारा बीते दशक से बौद्ध धर्म को लेकर सांस्कृतिक सर्वोच्चता दिखाने और दक्षिण पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म को लेकर अपनी महत्ता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जो कि भारत के लिए एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। जो दोनों देशों के मध्य सॉफ्ट पॉवर को बढ़ाकर एशिया में अपना प्रभाव और वर्चस्व स्थापित करके सांस्कृतिक श्रेष्ठता को स्थापित करने की प्रतिद्वंदिता से संबंधित है।

मुख्य शब्द: चीन, सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक सुरक्षा, बौद्ध धर्म, दक्षिण पूर्वी एशिया, वैश्विक व्यवस्था

प्रस्तावना

चीन ने जिस तेजी के साथ अपना आर्थिक विकास किया है, वह आज दुनिया के सामने अमेरिकी सर्वोच्चता को चुनौती देने वाले एक विकल्प के रूप में अपना स्थान बनाने में सक्षम हुआ है। किंतु यह विकास कितना टिकाऊ और भविष्योन्मुख रहने वाला है, यह

* Research Scholar, Delhi University

आने वाला भविष्य ही तय करेगा। आज देश हार्ड पॉवर के साथ ही साथ सॉफ्ट पावर को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सॉफ्ट पॉवर की अवधारणा का श्रेय ' जोसेफ नाई' को दिया जाता है। जिन्होंने बदलते विश्व परिदृश्य में शक्ति की शास्त्रीय अवधारणा से आगे बढ़कर राष्ट्रों के सॉफ्ट पावर को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया है। सॉफ्ट पावर का आशय सैन्य शक्ति को बढ़ाने की शास्त्रीय अवधारणा से आगे निकलकर सांस्कृतिक, पर्यटन, ऐतिहासिक विरासत, कूटनीति के क्षेत्र में राष्ट्र की शक्तियों को बढ़ाने से है। चीन ने पिछले दशक में इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति (2008) में सांस्कृतिक सुरक्षा को जोड़ा है। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अब चीन अपनी सॉफ्ट पावर का विस्तार करके विश्व पटल पर अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता की वैधता को स्थापित करना चाहता है। हालांकि चीन के तीव्र विकास के साथ ही वहां आंतरिक समस्याएं पैदा हुई, जो कुछ हद तक सांस्कृतिक और धार्मिक कारणों से भी प्रभावित थी। जिससे निपटने के लिए चीन अब अपनी सांस्कृतिक विरासत को प्रमुखता देकर लोगों में एकता का भाव पुष्ट करने का प्रयास भी कर रहा है।

भारतीय संस्कृति, प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत जितनी प्राचीन है, उतनी ही महान और धार्मिक भी है। भारतीय समाज सर्व समावेशी समाज रहा है, जिसमें नए गुणों को अपनाने की क्षमता के साथ ही साथ दोषों को दूर करने की भी क्षमता है। भारत में हिन्दू धर्म के साथ ही साथ अनेक धर्म पल्लवित तथा पुष्पित हुए हैं। जिनमें से बौद्ध धर्म भी एक है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति हिंदू धर्म में व्याप्त अवगुणों को दूर करने से हुई। बौद्ध धर्म भारत से उत्पन्न होकर आज पूरे विश्व में प्रचलित है। बौद्ध धर्म के अनुयायी विश्व भर में फैले हुए हैं, जो महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को लोगों तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। बौद्ध धर्म दक्षिण पूर्वी एशिया में सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्यता प्राप्त धर्मों में से एक है।

वर्तमान भारतीय सरकार ने भारत की इस अद्‌भुत विरासत एवं सांस्कृतिक क्षमता को पहचानते हुए सॉफ्ट पॉवर के रूप में देश को विश्व पटल पर आगे ले जाने के लिए प्रयास किए हैं। चीन ने जिस तेजी के साथ स्वयं को बौद्ध धर्म का मुख्य संरक्षक एवं बौद्ध मतावलंबियों का मुखिया बनकर उभरने का प्रयास कर रहा है, वह चीन की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का ही एक हिस्सा है। चीन की लगभग 33% जनसंख्या बौद्ध मतानुयायी

है। चीन में बौद्ध धर्म भारतीय बौद्ध धर्म से कुछ अलग चीनी समुदाय के गुण लिए हुए प्रचलित हुआ। जिसमें हण बौद्ध धर्म प्रमुख रूप से चीन में प्रचलित हुआ। जो समाज में परिवार की अवधारणा और पूर्वजों के महत्व को अपने गुणों में अवशोषित किए हुए आगे बढ़ा। चीन की ऐतिहासिक विरासत प्राचीन समय से ही समृद्ध रही है, किंतु समय के साथ तीव्र विकास की दौड़ में सांस्कृतिक विरासत को चीन में लम्बे समय तक उचित स्थान नहीं मिल पाया, जो वर्तमान समय में चीन की राजनीति में चिंता का प्रमुख विषय बना हुआ है। जिस प्रकार से माओ जेडोंग ने 1966-1976 के सांस्कृतिक क्रांति के दौरान बौद्ध विहारों को तोड़ा जिससे कि पूंजीवाद और परंपरागत ढांचों को समाप्त किया जा सके। वामपंथी विचारधारा का हमेशा से यह मानना रहा है कि धर्म राज्य, सरकार, समाज को कमजोर करता है। इसलिए कम्युनिस्ट नेताओं से नास्तिकवादी बने रहने की उम्मीद की जाती रही है। चीन के पहले कम्युनिस्ट नेता माओत्से तुंग ने धर्म को पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास किया था। उन्होंने नस्तिकतावाद को बढ़ावा दिया था। किंतु वर्तमान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने सांस्कृतिक महत्व की व्यापकता को देखते हुए बौद्ध विहारों को चीनी तरीके से पुनर्निर्मित एवं पुनर्जीवित करने का कार्य किया है। बीते कुछ सालों से चीन में धर्म पार्टी की सख्ती के बावजूद फला–फूला है। चीन में बौद्ध धर्म को ऐसा विदेशी धर्म माना जाता है, जिसकी ग्रामीण वर्ग के बीच सबसे ज्यादा स्वीकार्यता है। चीन में बौद्ध धर्म दूसरी शताब्दी में आया था। जो चीन के क्षेत्रीय गुणों को अपने आप में समाहित करने के साथ ही चीनी बौद्ध गुणों को लिए हुए प्रसारित हुआ। लंबे समयांतराल के बाद चीन की राजनीति में धार्मिक पहलुओं को फिर से जगह मिल रही है। चीन की शक्ति संतुलन की अवधारणा में 21वीं शताब्दी में व्यापक बदलाव देखा गया तथा सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करते हुए, चीन की अंतर्राष्ट्रीय जगत में सॉफ्ट पावर की क्षमता को बढ़ाने की दिशा में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

इसी क्रम में चीन ने बौद्ध धर्म की विश्व व्यापकता को देखते हुए, चीन के हेनान प्रांत में 128 मीटर की विश्व की सबसे बड़ी बौद्ध प्रतिमा का 2008 में अनावरण किया। जो 'स्प्रिंग टेंपल बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है। जो दुनिया भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र होने के साथ ही साथ बौद्ध मतावलंबियों के लिए धार्मिक स्थल भी है। इसके माध्यम से चीन विश्व में बौद्ध धर्म मतावलंबियों के प्रमुख हितधारक के रूप में बनकर

उभरने का प्रयास कर रहा है। इसके साथ ही लेशान के विशालकाय बुद्ध प्रतिमा और गुफाओं को भी विश्व पटल पर लाने के लिए तेजी से पर्यटन सुविधाओं को बढ़ाने का प्रयास निरंतर किया जा रहा है।

चीन ने अपनी बौद्ध सांस्कृतिक कूटनीति के तहत 2006 में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया। जो पूरे विश्व के लिए आचार्य का विषय रहा क्योंकि चीन कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा शासित देश है। इसी क्रम में मार्च, 2024 में हेनान में एशिया के बौद्ध भिक्षुओं का सम्मेलन हुआ, जिसके अंतर्गत प्रमुख बौद्ध भिक्षुओं ने यह निर्णय लिया की बौद्ध धर्म के विश्व भर में प्रचार एवं प्रसार में बीजिंग महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह सम्मेलन 'बोओ फोरम फॉर एशिया वार्षिक सम्मेलन' का ही एक हिस्सा है। जिसमें पहली बार नेपाल, श्रीलंका, जापान, वियतनाम, कंबोडिया, साउथ कोरिया से बौद्ध भिक्षुओं ने भी हिस्सा लिया। जो चीन की बौद्ध धर्म से संबंधित सॉफ्ट कूटनीति का एक कारगर हिस्सा बना है। इसी क्रम में चीन में बौद्ध ग्रंथों का बड़े पैमाने पर अनुवाद, बौद्ध विचारों का व्यापक प्रसार, धार्मिक एकता तथा बुद्ध की इक्षाओं को सार्थक रूप देने का निर्णय किया गया, जिससे कि बौद्ध मत को पूर्वी एशियाई देशों में प्रचलित धर्म के साथ जोड़ने का प्रयास किया जा सके। चीन ने बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु संस्कृत और बौद्ध शिक्षाओं को शैक्षिक जगत में विश्व विख्यात चीनी विश्वविद्यालयों में सम्मिलित भी किया है । इन कदमों के माध्यम से चीन धार्मिक सर्वोच्चता और पूर्वी एशियाई देशों में धार्मिक एकरूपता के माध्यम से देशों को प्रभावित कर विश्व व्यवस्था में अपना शक्ति संतुलन बेहतर करने का प्रयास कर रहा है।

विश्व व्यवस्था में बीते दशकों में भारत का स्थान तेजी से मजबूत होने के साथ ही साथ पूरा विश्व चीन के तेजी से बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत की ओर आशा की निगाहों से देख रहा है। आज भारत जिस तेजी के साथ अपनी विश्वगुरु बनने की राह पर आगे बढ़ा है और विश्व जगत में भी भारत की स्वीकार्यता बढ़ी है, वह कहीं न कहीं नियम आधारित विश्व व्यवस्था के लिए एक सुखद खबर है। क्योंकि चीन नियम आधारित विश्व व्यवस्था का खण्डन इस तर्क के साथ करता है कि ये नियम पश्चिमी जगत द्वारा अपने लाभों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पूरे विश्व समुदाय पर थोपे गए हैं, साथ ही चीन इस नियम निर्माण में भागीदार नहीं रहा है। विश्व व्यवस्था की अराजक स्थिति को देखते हुए विश्व के अधिकांश देशों के मध्य नियम आधारित विश्व

व्यवस्था को मानने पर आम सहमति बनी हुई है। भारत सदैव से नियम आधारित विश्व व्यवस्था का समर्थन करता रहा है क्योंकि इससे किसी भी अराजक स्थिति से बचा जा सकता है। 1990 के दशक के उपरांत भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोलते हुए पूरे विश्व के साथ तेजी से जुड़ने की दिशा में जो कदम बढ़ाया है, उसी का परिणाम है कि भारत आज तेजी के साथ आर्थिक विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। साथ ही साथ भारत सदैव से शांतिप्रिय देश रहा है। जो भारत के धर्मों के रीढ़ की हड्डी भी रही है।

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में ही हुई है,और यहीं से आगे निकलकर बौद्ध धर्म चीन पहुंचा। जिसमें बौद्ध भिक्षुओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिन्होंने बौद्ध की शिक्षाओं को पूर्वी एशियाई देशों तक प्रचारित एवं प्रसारित किया। भारत प्राचीन काल से ही बौद्ध शिक्षाओं का केंद्र रहा है। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि जैसे महान प्राचीन विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहे हैं। जहां देश विदेश से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने प्राचीन समय में आते रहे हैं। चीन के कई विद्वानों ने भी यहां से शिक्षा ग्रहण की है। किंतु बाह्य आक्रमणों के द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को इतिहास से मिटाने के प्रयास किए गए। महात्मा बुद्ध का जन्मस्थान और निर्वाण स्थान इसी भारत भूमि में स्थित है। वर्तमान सरकार ने अपनी विदेश नीति में व्यापक बदलाव लाते हुए भारत की इस क्षमता और बुद्धिजीविता को विश्व पटल पर लाने के प्रयासों को दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। जिससे चीन की बौद्ध धर्म में विश्व सर्वोच्चता और महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को अपने हितों की पूर्ति के अनुरूप व्याख्यायित करते हुए पूर्वी एशियाई देशों के बीच स्वयं को बौद्ध धर्म का मुख्य संरक्षक दिखाने की इस नीति से निपटा जा सके। आसियान(आसियान) देशों की एक बड़ी जनसंख्या बौद्ध मतानुयायी है। आसियान मंच के माध्यम से भी चीन अपनी रणनीति को कारगर करने का लगातार प्रयास कर रहा है। किंतु भारत की आसियान देशों के प्रति अच्छी पहुंच और सांस्कृतिक एकरूपता को ध्यान रखते हुए भारतीय सरकार ने बौद्ध धर्म को भारतीय विदेश नीति का अहम हिस्सा मानते हुए नीति निर्माण का कार्य किया है। महात्मा बुद्ध की जन्मस्थली होने के कारण और बौद्ध शिक्षाओं का प्राचीन केंद्र होने की वजह से पूर्वी एशियाई देशों से बड़ी संख्या में पर्यटक इन पवित्र स्थानों के दर्शन हेतु प्रति वर्ष आते हैं। इसको मद्देनजर रखते हुए वर्तमान भारत सरकार ने 'बुद्ध सर्किट' की परियोजना का शुभारंभ किया। जिसके अंतर्गत रेल मंत्रालय और पर्यटन विभाग के साथ ही सांस्कृतिक मामलों

से संबंधित मंत्रालय के द्वारा भगवान बुद्ध के जीवन वृतांत से जुड़े हुए स्थानों को आपस में परिवहन की व्यवस्था से जोड़ा गया है, जिससे विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ ही साथ इन स्थानों के सामरिक महत्व को भी उचित स्थान दिया जा सके। महात्मा बुद्ध के जीवन से निर्वाण तक के स्थानों को इस परियोजना के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया गया है। वाराणसी में स्थित सारनाथ बौद्ध भिक्षुओं के लिए पवित्र स्थल है। जो विदेशी पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है। भारत सरकार के द्वारा आधारभूत संरचना के विकास के क्रम में इन सभी स्थलों को विकसित करते हुए, विदेशी पर्यटकों को सुगमता प्रदान करने का लगातार प्रयास किया जा रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करने का प्रयास सराहनीय कदमों में से एक है, जो बौद्ध शिक्षाओं का केंद्र रहा है। आज पुनः इस प्राचीन विश्वविद्यालय को स्थापित करके विदेशी विद्यार्थियों को आकर्षित किया जा रहा है, जिससे इस विश्वविद्यालय की वैश्विक सर्वोच्चता को पुनःस्थापित किया जा सके। और पुनः यह स्थान बौद्ध शिक्षा का केंद्र बन सके। जो भारत को विश्व पटल पर विश्वगुरु के रूप में उभारने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। जो भारत की सॉफ्ट पॉवर को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

भारत की संस्कृति सदैव से अक्षुण्ण रही है और इसकी जड़ें प्राचीन काल से ही भारतीय समाज का हिस्सा रही हैं। चीन द्वारा बौद्ध धर्म को अपने शक्ति नियंत्रण में लेकर भारत की सॉफ्ट कूटनीति को जो चुनौती दी जा रही है, उससे निपटने में भारत पूरी तरह सक्षम है। भारत पूर्वी एशियाई देशों में बौद्ध धर्म का मुखिया रहा है। अगर एक प्रकार से देखा जाए तो भारत और पूर्वी एशियाई देशों का बौद्ध धर्म को लेकर गुरु और शिष्य का संबंध है। आज भी बौद्ध भिक्षु दूर देशों से बौद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करने और सीखने भारत आते हैं। जो भारत की सर्वोच्चता को दर्शाता है। हालांकि भारत ने कभी खुद को इस रूप में प्रदर्शित नहीं किया हैं। किंतु आज चीन के इस क्षेत्र में बढ़ते हुए प्रभाव से निपटने के लिए भारतीय रणनीति में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज भारतीय सरकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विचार को आगे लेकर बढ़ रही है। कंबोडिया में आज भी हिंदू संस्कृति की स्वीकार्यता स्थापित है। भारत की 'पूर्व की ओर देखो नीति' को बदलकर 'पूर्व की ओर कार्य करें' नीति के अंतर्गत भी बौद्ध धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही साथ इस क्षेत्र में अभी भी व्यापक संभावनाएं व्याप्त हैं।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 1952 में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का सांची में संचालन किया। जो तत्कालीन समय में सबसे बड़ा बौद्ध सम्मेलन था। इसी क्रम में 2011 में महात्मा बुद्ध के ज्ञानोदीप्त के 2600 वीं वर्षगांठ पर भारत द्वारा वैश्विक बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। (किश्वर,2023)जिसमें दलाई लामा की उपस्थिति का व्यापक विरोध चीन द्वारा किया गया। दलाई लामा की भारत में उपस्थिति भी बौद्ध धर्म की स्थिति को भारत में मजबूत करती है, जिसमें चीन सदैव अपना विरोध दर्ज कराता रहता है। क्योंकि दलाई लामा की भारत में उपस्थिति बौद्ध धर्म के पक्ष में चीन की स्थिति को कमजोर करती है। बौद्ध भिक्षुओं में यह मान्यता है कि भारतीय 'तवांग' क्षेत्र में अगले दलाई लामा का जन्म होगा। जो चीन के द्वारा अस्वीकार किया जाता रहा है।

बौद्ध धर्म भारतीय सॉफ्ट कूटनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत विश्व शांति को देशों ने महत्व दिया है। भारतीय विदेश नीति में 'पंचशील' भी बौद्ध शिक्षाओं से प्रभावित रहा है। वर्तमान मोदी सरकार ने भारतीय विदेश नीति में 'पंचामृत' को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। जिसमें से भारतीय विदेश नीति के लिए पांचवां अमृत 'संस्कृति और सभ्यता' को रखा गया है। जो वर्तमान सरकार की संस्कृति के प्रति सकारात्मक सोच को विश्व पटल पर भारत को लाभान्वित करने के लिए प्रयोग किए जाने से भी संबंधित है। जिसमें बौद्ध धर्म चीन की प्रतिद्वंदिता से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बौद्ध धर्म की व्यापक एशियाई क्षेत्र में पहुंच और शांतिप्रिय धर्म के रूप में पहचान के साथ इसकी अहिंसक साधनों के प्रति आस्था इसको सॉफ्ट पावर कूटनीति में आदर्श स्थिति प्रदान करती है। इस वजह से भारतीय सरकार बौद्ध तीर्थस्थलों का विकास देशों के साथ कूटनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं रणनीतिक भागीदारी को ध्यान में रखकर कर रही है।

वहीं दूसरी तरफ चीन ने बदलते वैश्विक वातावरण को ध्यान में रखते हुए महाद्वीप में धर्म की कूटनीतिक महत्ता को समझकर अपनी महाद्वीप सॉफ्ट पावर रणनीति में धर्म को शामिल किया है। चीन बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक उपस्थिति को मान्यता देते हुए यह तर्क देता है कि वह दुनिया में सबसे ज्यादा बौद्ध जनसंख्या वाला देश है। इस लिहाज से भी वह बौद्ध धर्म कर विश्वास रखने वालों का मुखिया है। चीन एशिया में आर्थिक एवं सैन्य रूप से सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र है और अब यह विश्व पटल पर अपनी धार्मिक

सर्वोच्चता के माध्यम से स्वयं के हितों को साधने का प्रयास कर रहा है। जिसकी राह में सबसे बड़ी अड़चन भारत ही है। दोनो देशों के मध्य बौद्ध कूटनीति के संदर्भ में सबसे बड़ी प्रतिस्पर्धा की वजह दलाई लामा को लेकर है। जो भारत में शरण लिए हुए हैं। जिन्हे चीन के द्वारा वापस सौंपने के लिए भारत सरकार से लगातार कहा जाता रहा है, क्योंकि यह चीनी संप्रभुता के लिए एक बड़ी चुनौती प्रदर्शित करता है। भारत इस स्थिति में ज्यादा मजबूत दिखता है। बौद्ध प्राचीन 8 स्थानों में से 7 स्थान भारत में स्थित हैं, जो भारत की पर्यटन कूटनीति को मजबूत करते हैं। किंतु यह वैश्विक बौद्ध पर्यटकों का केवल 1 प्रतिशत हिस्से को ही अपनी ओर आकर्षित कर पा रहे हैं। जो भारत के लिए एक चुनौती है। अधिकांश बौद्ध पर्यटन दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं। जो अब चीन के लिए एक अवसर पैदा कर रहा है। पर्यटन को बेहतर व्यवस्थाओं का विकास इस क्षेत्र में पर्यटन की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के साथ ही साथ भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को मजबूत करने में भी योगदान देने की क्षमता रखता है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि बौद्ध धर्म की शिक्षाएं शांति एवं अहिंसा पर विश्वास रखते हुए समस्त मानव समुदाय के कल्याण पर बल देती हैं। इन शिक्षाओं के द्वारा वर्तमान विश्व में चल रहे संघर्षों को हल करने का प्रयास किया जा सकता है। आज सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी का योगदान वैश्विक व्यवस्था मे बढ़ा है। भारत अपनी नीतियों के द्वारा चीन की सर्वोच्चता को सॉफ्ट पावर कूटनीति के द्वारा चुनौती देने में सर्वाधिक सक्षम है। चीन जिस प्रकार से तेजी से बौद्ध धर्म के माध्यम से विश्व बौद्ध भिक्षुओं को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है वह उसकी विदेश नीति का प्रमुख हिस्सा है। जिसे भारत से चुनौती मिल रही है। वर्तमान भारतीय सरकार द्वारा भारतीय संस्कृति में विद्यमान क्षमताओं को सही दिशा में कार्यान्वित करके अपनी विदेश नीति को पुष्ट करने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। साथ ही अभी भी बौद्ध धर्म में व्याप्त क्षमताओं एवं संभावनाओं को पूरी तरह से कार्यान्वित करना बाकी है। भारत आज योग एवं सांस्कृतिक समृद्धता के माध्यम से विश्व में अपनी पहचान को मजबूत करने के साथ ही साथ अन्य देशों को भी स्वयं से प्रभावित कर रहा है। जो भारत को विश्वगुरु बनने की राह में मदद करने के साथ ही साथ भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा को भी सार्थक कर रहा है।

संदर्भ

Kishwar, S. & Observer Research Foundation. (2018). The rising role of Buddhism in India's soft power strategy. In ORF ISSUE BRIEF: Vol. No. 228 [Journal-article].
Nye, J. S. (1990). Soft power. Foreign Policy, 80, 153. https://doi.org/10.2307/1148580
Pti. (2024, April 4). China played "pivotal role" in promotion of Buddhism globally: Top Chinese Buddhist monk. Hindustan Times.
Renwick, N., & Cao, Q. (2008). China's Cultural Soft Power: An emerging National Cultural Security Discourse. American Journal of Chinese Studies